1. प्रस्तावना

1 पतरस 4:12 में प्रेरित पतरस उन विश्वासियों को संबोधित करते हैं जो परीक्षा और सताव से गुजर रहे थे। उनकी यह शिक्षा उन्हें दिलासा देती है, दृष्टिकोण देती है और मसीही दुःख के स्वरूप को लेकर एक गहरी आत्मिक समझ प्रस्तुत करती है।

1 पतरस 4:12 (ERV-HI)
“प्रिय साथियो, जब तुम अग्नि परीक्षा से गुजर रहे हो, जो तुम्हारी परीक्षा करने के लिये आती है, तो यह सोच कर अचम्भित
मत होओ कि तुम पर कुछ असामान्य बीत रहा है।”

यहाँ “अग्नि परीक्षा” (यूनानी: purosis) का अर्थ है — एक पीड़ादायक परिशोधन प्रक्रिया, जो आम जीवन की कठिनाइयों से कहीं अधिक गहराई वाली आत्मिक परीक्षा है। यह मृत्यु या शोक जैसे सामान्य दुःखों की नहीं, बल्कि विश्वास के शुद्धिकरण की बात कर रही है।

2. इस “दुःख” का स्वरूप — विश्वास की अग्नि परीक्षा

पतरस यहाँ ऐसे गहन सतावों और परीक्षाओं की बात कर रहे हैं,

जिनका सामना मसीह के कारण किया जाता है। यह केवल जीवन की साधारण समस्याएँ नहीं हैं, बल्कि वे दुःख हैं जो हमारे विश्वास को परखते और परिशोधित करते हैं — ठीक वैसे ही जैसे सोना आग में तपाया जाता है:

1 पतरस 1:6–7 (ERV-HI)
“इस कारण तुम आनन्दित होते हो, यद्यपि अब थोड़ी देर के लिए,
यदि आवश्यक हो, तो तुम्हें विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं में दुख उठाना पड़ता है। यह इसलिये कि तुम्हारा विश्वास, जो आग में परखे गये नाशवान सोने से कहीं अधिक मूल्यवान है, यीशु
मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, महिमा और आदर का कारण बने।”

इससे स्पष्ट है कि मसीही जीवन में दुःख कोई आश्चर्यजनक बात नहीं, बल्कि यह आत्मिक परिपक्वता और अनंत पुरस्कार की तैयारी का हिस्सा है।

3. एक बाइबिल उदाहरण: वह स्त्री जो बारह वर्ष से रक्तस्राव से पीड़ित थी

पतरस द्वारा उल्लिखित दुःख हमें उस स्त्री की याद दिलाता है जो बारह वर्षों से लगातार बीमारी और सामाजिक बहिष्कार से पीड़ित थी:

मरकुस 5:27–29, 33–34 (ERV-HI)
“उसने यीशु के विषय में सुनकर भीड़ में पीछे से आकर उसका वस्त्र छू लिया। क्योंकि वह सोचती थी, ‘अगर मैं उसका वस्त्र ही छू लूँ, तो चंगी हो जाऊँगी।’ और तुरंत उसका रक्तस्राव रुक गया और उसने अपने शरीर में यह अनुभव किया कि वह बीमारी से
चंगी हो गई है। […] वह स्त्री डरती और कांपती हुई आयी
क्योंकि वह जानती थी कि उसमें क्या हुआ है। वह उसके आगे गिर पड़ी और सारा सच बता दिया। तब यीशु ने उससे कहा, ‘बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। शान्ति के साथ जा और अपनी
बीमारी से चंगी हो जा।’”

यह घटना दर्शाती है कि बाइबिल में “दुःख” केवल शारीरिक पीड़ा ही नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक दर्द को भी दर्शाता है — जिन सभी को मसीह चंगा कर सकता है।

4. आत्मिक अंतर्दृष्टि: मसीह के साथ दुःख सहना

1 पतरस 4:13–14 में पतरस हमें याद दिलाते हैं कि यह दुःख मसीह के साथ सहभागी होने का विशेष सौभाग्य है:

1 पतरस 4:13–14 (ERV-HI)
“इसके बजाय तुम मसीह के दुःखों में सहभागी होने के कारण आनन्दित हो ताकि जब उसकी महिमा प्रगट हो, तब तुम आनन्द और उल्लासित हो सको। यदि तुम मसीह के नाम के कारण अपमानित किए जाते हो, तो धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, अर्थात परमेश्वर का आत्मा तुम पर निवास करता है।”

यह हमें सिखाता है:

मसीह के लिए दुःख सहना एक आदर है, न कि अपमान।
पवित्र आत्मा उन पर ठहरता है, जो मसीह के नाम के लिए पीड़ित होते हैं।
यह एक आगामी महिमा की झलक है (देखें: रोमियों 8:17)

5. बाइबिल की स्थिरता: यह दुःख अपेक्षित है

पौलुस ने भी मसीह में जीवन जीने वालों को चेताया कि उन्हें भी सताव सहना पड़ेगा:

1 थिस्सलुनीकियों 3:7 (ERV-HI)
“इसलिए, भाइयों और बहनों, हम तुम्हारे विश्वास के कारण अपनी सारी कठिनाइयों और कष्टों में ढाढ़स बंधे हैं।”

2 तीमुथियुस 3:12 (ERV-HI)
“जो कोई मसीह यीशु में भक्ति का जीवन जीना चाहता है, उसे सताया जाएगा।”

यह बात स्वयं यीशु ने भी स्पष्ट की थी:

यूहन्ना 15:18–20 (ERV-HI)
“यदि संसार तुमसे बैर करता है, तो जान लो कि इसने तुमसे पहले मुझसे बैर किया है। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपने लोगों से प्रेम करता; परन्तु क्योंकि तुम संसार के नहीं हो, बल्कि मैंने तुम्हें संसार में से चुना है, इसलिए संसार तुमसे बैर करता है।”

6. अंतिम विचार

मसीही जीवन में दुःख:

विश्वास की अग्निपरीक्षा है, कोई दण्ड नहीं।
यह अवसर है मसीह के जीवन और विजय में सहभागी होने का।

यह लज्जा का नहीं, बल्कि आनन्द का कारण है।
यह एक क्षणिक पीड़ा है जिसका अनंत मूल्य है।

यदि हम संसार के अनुसार चलें तो हम संभवतः सताव से बच सकते हैं — लेकिन हम भक्तिपूर्ण जीवन की सामर्थ्य खो देंगे:

याकूब 4:4 (ERV-HI)
“हे व्यभिचारी लोगो, क्या तुम नहीं जानते कि संसार से
मित्रता करना परमेश्वर से बैर करना है? इसलिए जो कोई संसार
का मित्र बनना चाहता है, वह परमेश्वर का शत्रु ठहरता है।”

निष्कर्ष

1 पतरस 4:12 में उल्लिखित “दुःख” का अर्थ मृत्यु या सामान्य शोक नहीं, बल्कि वह शुद्धिकारी अग्नि है जो सताव और परीक्षाओं के माध्यम से आती है, विशेष रूप से मसीह में विश्वास के कारण। ये परीक्षाएँ पीड़ादायक तो हैं, पर व्यर्थ नहीं। ये हमारे विश्वास को मजबूत करती हैं, परमेश्वर की महिमा को दर्शाती हैं, और हमें अनंत प्रतिफल के लिए तैयार करती हैं।

रोमियों 8:18 (ERV-HI)
“मुझे यह भरोसा है कि इस वर्तमान समय के दुःख उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं हैं, जो भविष्य में हम पर प्रगट की जाएगी।”

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp